हिंदू समाज में स्त्रियो का स्थिति

कुछ अन्य पुरातन प्रमाणों से।

आज हम हिंदू समाज में नारियों की स्थिति पर बात करेगें। अनेकों वामपंथी, विधर्मी षड्यंत्र कार कहते हैं कि अंग्रेजों से पूर्व भारतीय महिलाओं को धार्मिक और सामाजिक कार्यों का अधिकार नहीं था। वे सिवाय चारदीवारी के और सिर झुकाकर घर का चूल्हा बर्तन के अलावा कुछ नहीं कर पाती थी। किंतु जब हम अंग्रेजों से पूर्व भारत का अध्ययन पुरातात्विक प्रमाण जैसे अभिलेख आदि के माध्यम से करते हैं तो हम कुछ अन्य ही पाते हैं। हम वो प्राप्त करते हैं, जिसे हमें अभी तक पढाया नहीं गया। कुछ लोग तो ये भी भ्रम फैलाते हैं कि महिलाओं को सभी अधिकार संविधान बनने के बाद मिले। वैसे तो हम इस विषय के समाधान पर अनेकों विडियो ला चुके हैं किंतु आज कुछ और प्रमाण देखेगें।

हिन्दू महिलाओं के अधिकारों और उनके समाजिक, धार्मिक कार्यों में योगदान देखने के लिए, अब आपको अन्य कहीं देखने और सुनने की आवश्यकता नहीं है। इसका प्रमाण हमारी सरकार के कारण अब आप सबकी जेब में है। जी हाँ। इसका प्रमाण आप सबकी जेबों में है। तो प्रमाण देखने के लिए आप सब अपनी जेब से पर्स निकालकर, सौ रुपये का नोट निकालिए। हां सौ रुपये के नए नोट को निकालिए और इसे पलटकर देखिए। इसके पीछे एक सुंदर वाब का चित्र है।



हिन्दू महिलाओं के अधिकारों और उनके समाजिक, धार्मिक कार्यों में योगदान देखने के लिए, अब आपको अन्य कहीं देखने और सुनने की आवश्यकता नहीं है। इसका प्रमाण हमारी सरकार के कारण अब आप सबकी जेब में है। जी हाँ। इसका प्रमाण आप सबकी जेबों में है। तो प्रमाण देखने के लिए आप सब अपनी जेब से पर्स निकालकर, सौ रुपये का नोट निकालिए। हां सौ रुपये के नए नोट को निकालिए और इसे पलटकर देखिए। इसके पीछे एक सुंदर वाब का चित्र है।



आइये जानते हैं कि यह किस वाब का चित्र है और इसे किसने बनवाया। यह चित्र रानी की वाब का है। यह वाब गुजरात के पाटन में है। इसे 1063 में सोलंकी शासक भीमदेव की पत्नि महारानी उदयामति ने बनवाया था। इससे पता चलता है कि महिलाऐं इतनी सक्षम होती थी कि वे स्वयं मंदिर, वाब आदि निर्माण करती थी। रानी की वाब में अनेकों हिंदू देवी देवताओं की प्रतिमाओं को उकेरा गया है।

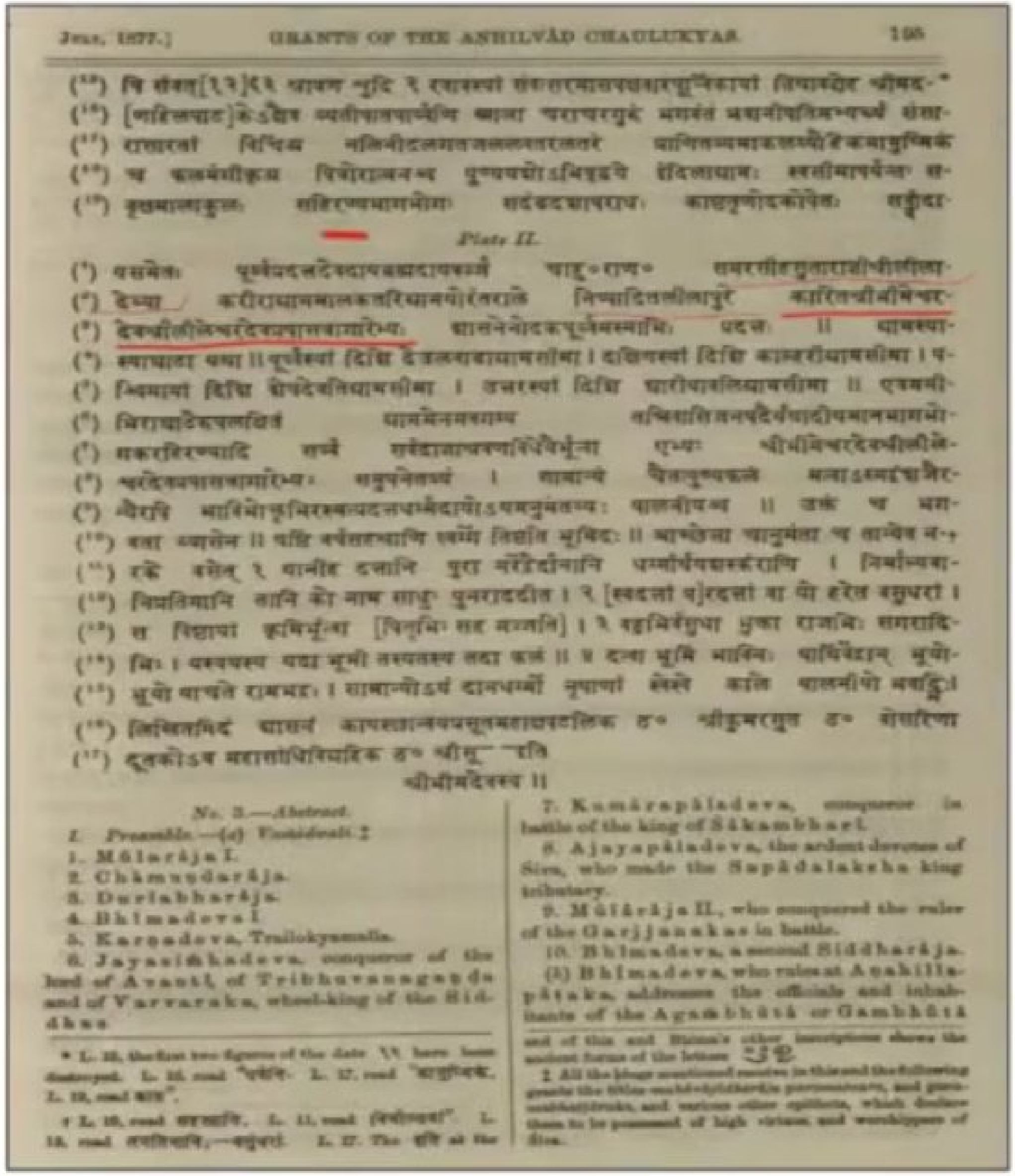









आपने ये तो पढा होगा कि इस शहर, गांव या जगह को इस राजा या पुरुष ने बसाया किंतु कभी आपने ऐसा पढा या सुना है कि किसी रानी या महिला ने किसी गांव, शहर को बसाया हो? किंतु हिंदू समाज में यह उस समय भी सम्भव था, जब यूरोप में महिलाओं को वोट डालने तक का अधिकार नहीं था। पाटन से प्राप्त एक ताम्रपत्र जो कि इंडियन एन्टी क्वेरी 1877 में प्रकाशित हुआ था। यह ताम्रपत्र सिद्धराज भीमदेव 2 की रानी लीलादेवी का है। इसके अनुसार रानी लीलादेवी ने करीरा और मालकतरि गांव के मध्य में अपने नाम से लीलापुर नामक गांव बसाया था। साथ ही दो मंदिर भीमेश्वर देव और लीलेश्वर देव भी बनवाऐ। इन मंदिरों के साथ जलशाला और नियमित भोजनशाला अर्थात सत्रागार संचालित था।

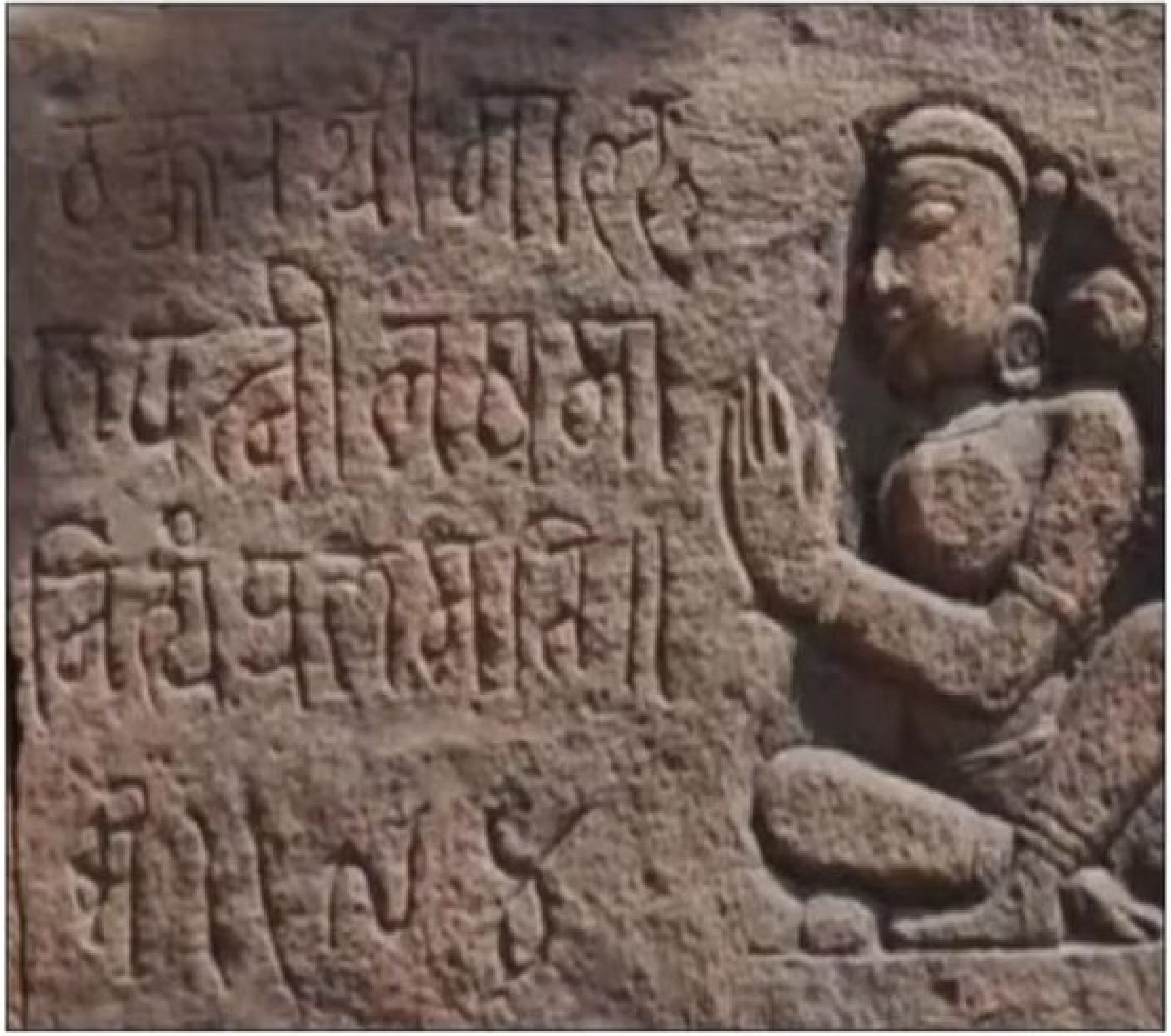


अतः इस प्रमाण से स्पष्ट है कि हिन्दू रानियां न केवल मंदिर बनवाती थी अपितु वे गांव भी बसवाती थी। क्या आपने इससे पूर्व कभी सुना था कि जैसे सवाई जयसिंह ने जयपुर बसाया वैसे ही किसी रानी ने कोई गांव, नगर आदि बसाया हो?



गांधार के एक कुषाण कालीन हाथी दांत की एक पट्टी पर एक आश्रम का चित्रण है, जहां एक आचार्य को महिलाओं और पुरुषों द्वारा प्रणाम करते दिखाया है, इससे यह पता लगता है कि महिला और पुरुष दोनों आश्रमो पर उपदेश लाभ लेते थे।

उ. प्र. के कालिंजर से प्राप्त इस अभिलेख में ठाकुर श्री माल्ह की पत्नी का अंकन है। अभिलेख के अनुसार वे मंदिर में नित्य पूजा करती थी। अभिलेख 1154 का है। इससे स्पष्ट है कि महिलाओं को मंदिर जाने और पूजा करने का अधिकार था।




ठक्कुर श्री माल्ह
लपतनीलघमा
नित्यं प्रलमति ॥

इसी मंदिर से ठाकुर श्री पाउल, राउत श्री वछराज का परिवार सहित पूजन करने का अंकन है। जिसमें स्त्री, पुरुष और बच्चों का अंकन है, जो कि यह स्पष्ट करता है कि मंदिर जाने में किसी भी तरह का लैंगिक भेदभाव नही था। लोग परिवार सहित मंदिर आते थे।





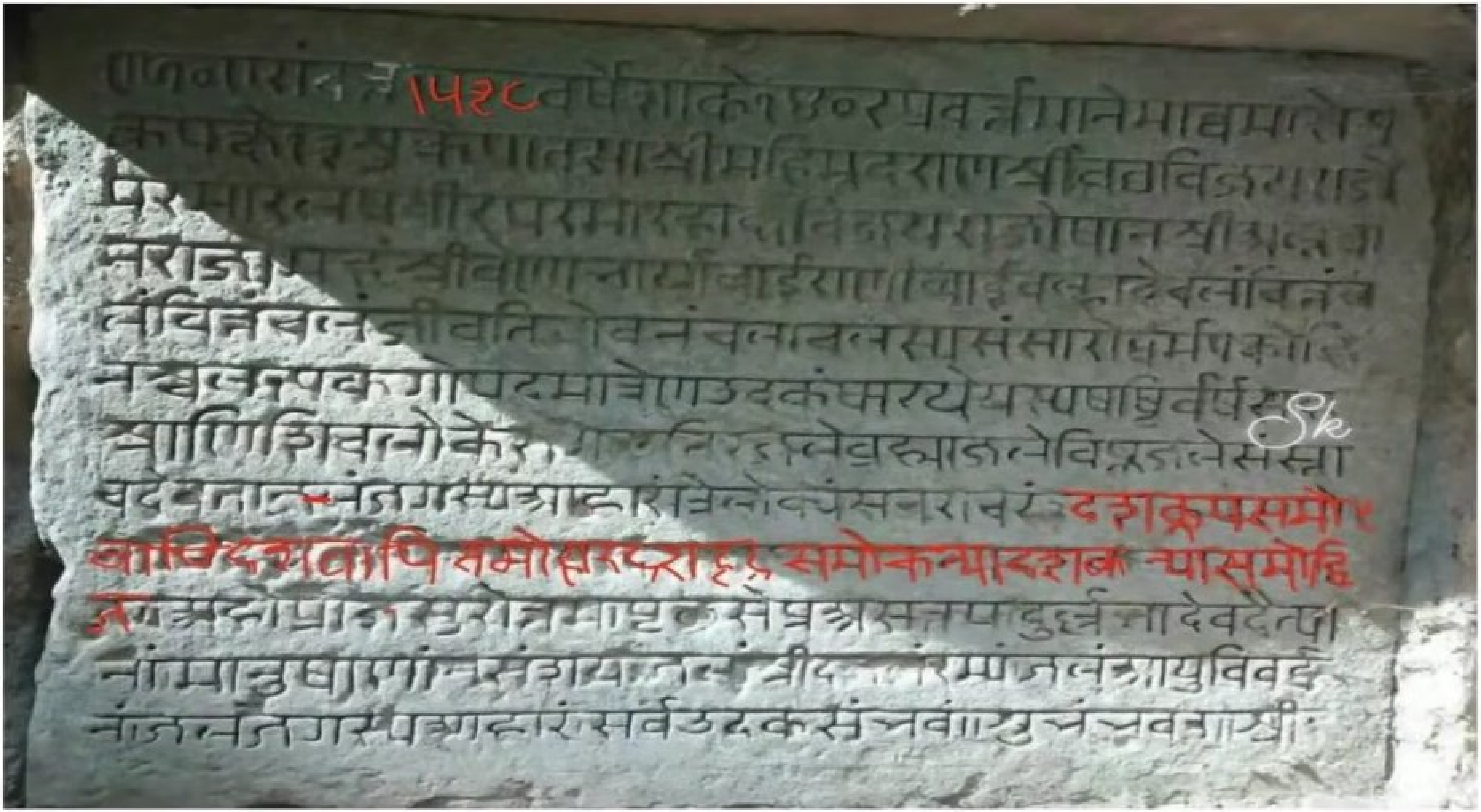

पुत्र श्रीकुले
नागपुत्र श्री कु

इसी प्रकार खजुराहो के मंदिर पर भी स्त्री पुरुषों को शिवलिंग पूजा करते दिखाया गया है। इसमें पूजा के साथ - साथ नृत्य वादन भी हो रहा है, जैसे कि यह सम्भवतः शिवरात्रि जैसे उत्सव का अंकन हो।



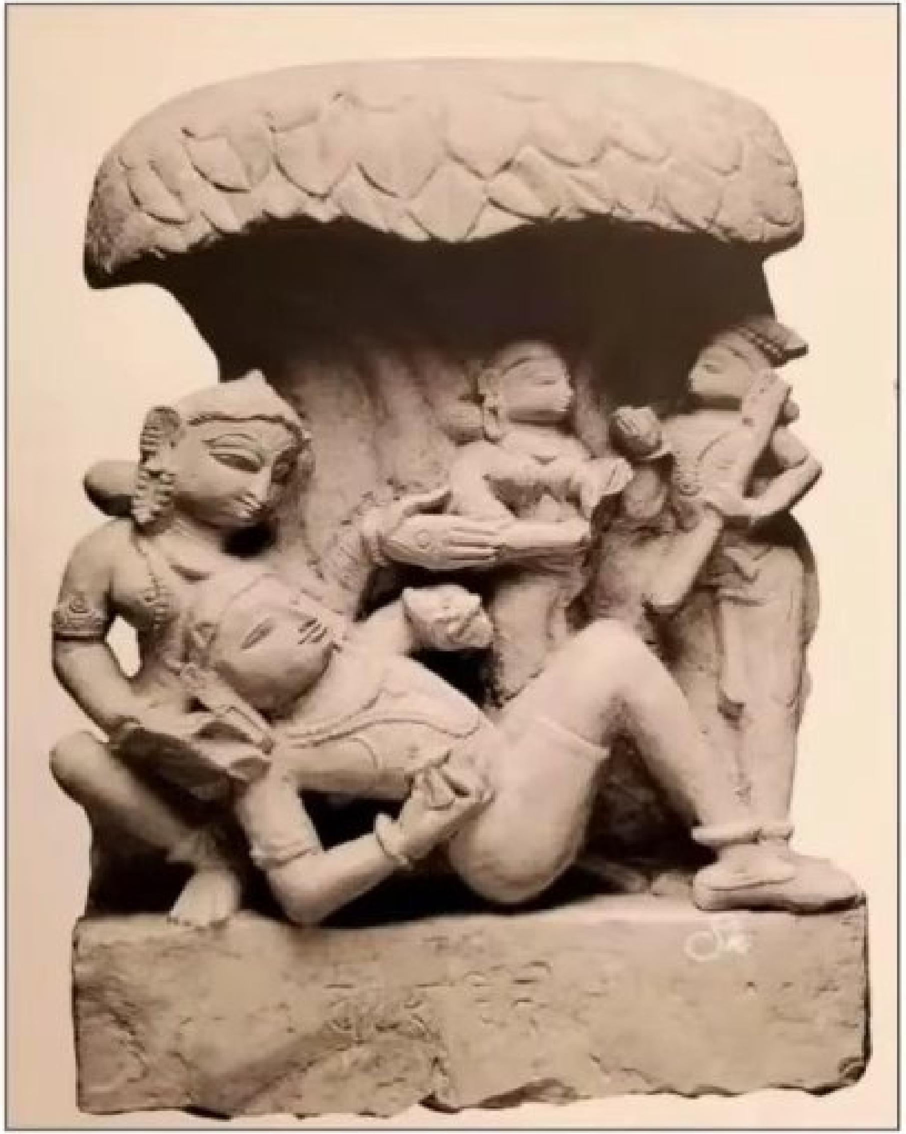


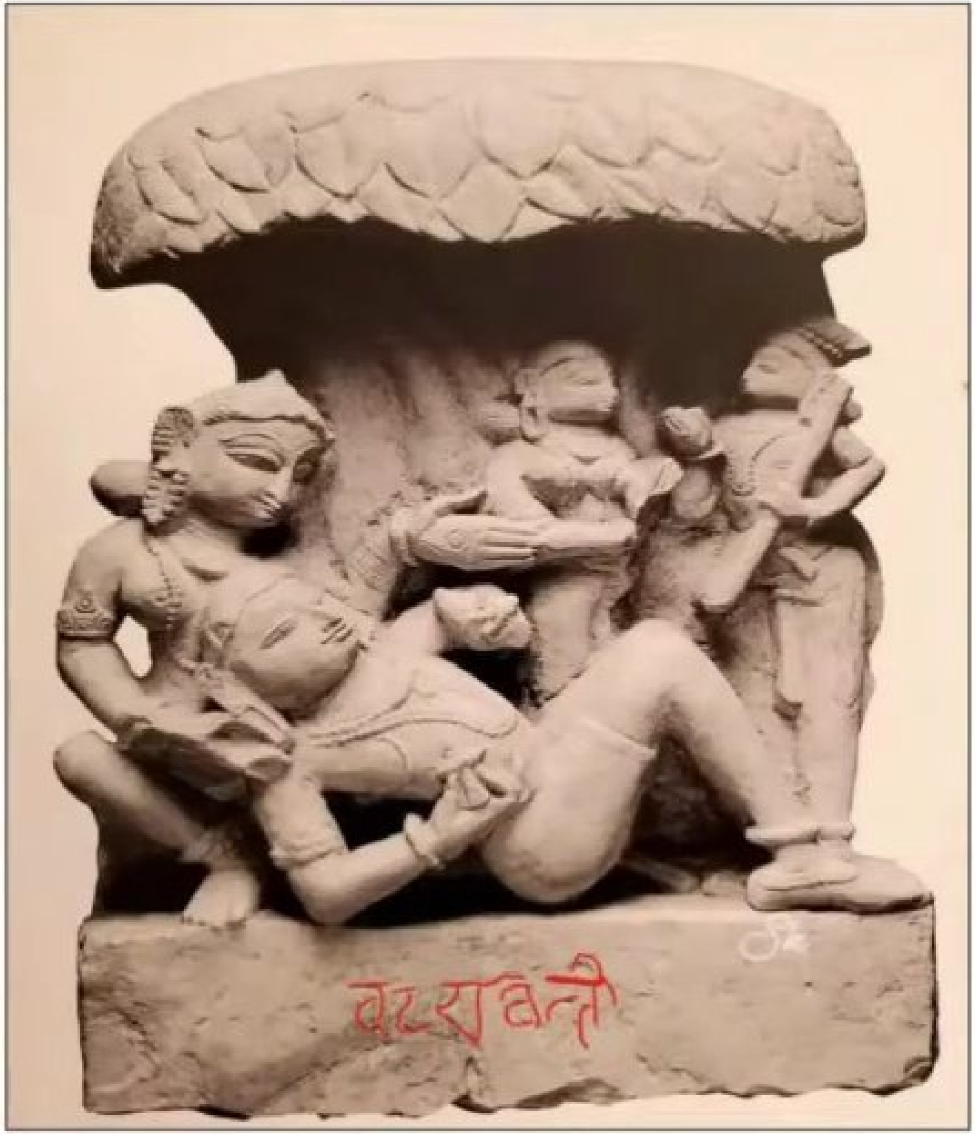
पद्म पुराण में भी कन्या के पालन को पुण्य में गिना गया है। पद्म पुराण में - दश कूप समा वापि, दश वापी समो ह्रद, दश ह्रद समा कन्या, दश कन्या समो द्रुम आया है। यही श्लोक मत्स्य पुराण में भी है किंतु वहां कन्या की जगह पुत्र शब्द पाठान्तर है। इससे स्पष्ट है कि कन्या और पुत्र दोनों का पालन पुण्य समझा जाता था। तथा इससे यह भी स्पष्ट है कि प्रयोगानुसार और प्रकरणानुसार संस्कृत ग्रंथों के वाक्यों, वचनों में लिंग, विभक्ति परिवर्तित की जा सकती है। अर्थात यदि कोई आशीर्वाद वचन पुरुषवाची वाक्य में है तो उसे प्रयोग करने पर कन्या के लिए स्त्रीलिंग वाचक बनाया जा सकता था। कन्या के साथ ही पद्म पुराण का यही श्लोक 15 वीं सदी की गुजरात की सुरेंद्र नगर के मूलि जिले के राजबाई की बावडी पर अंकित एक शिलालेख पर भी है -

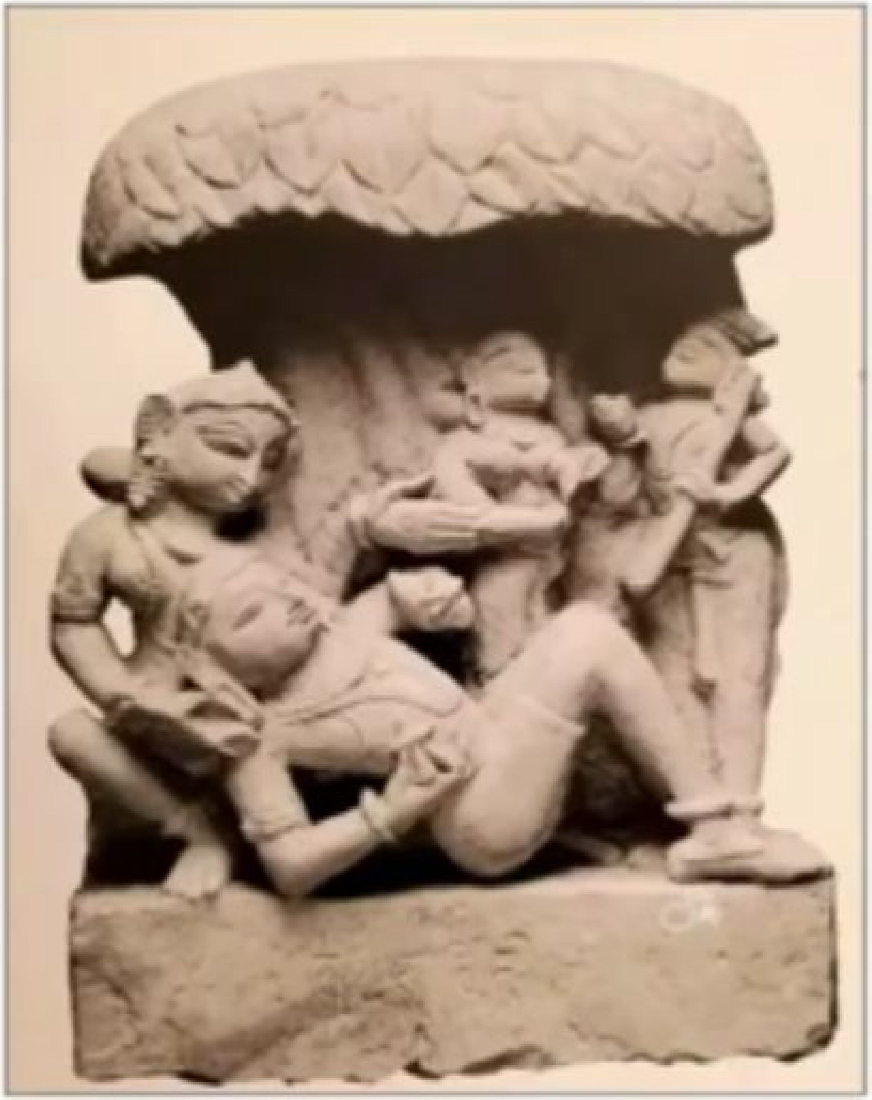

१५२८
Sk

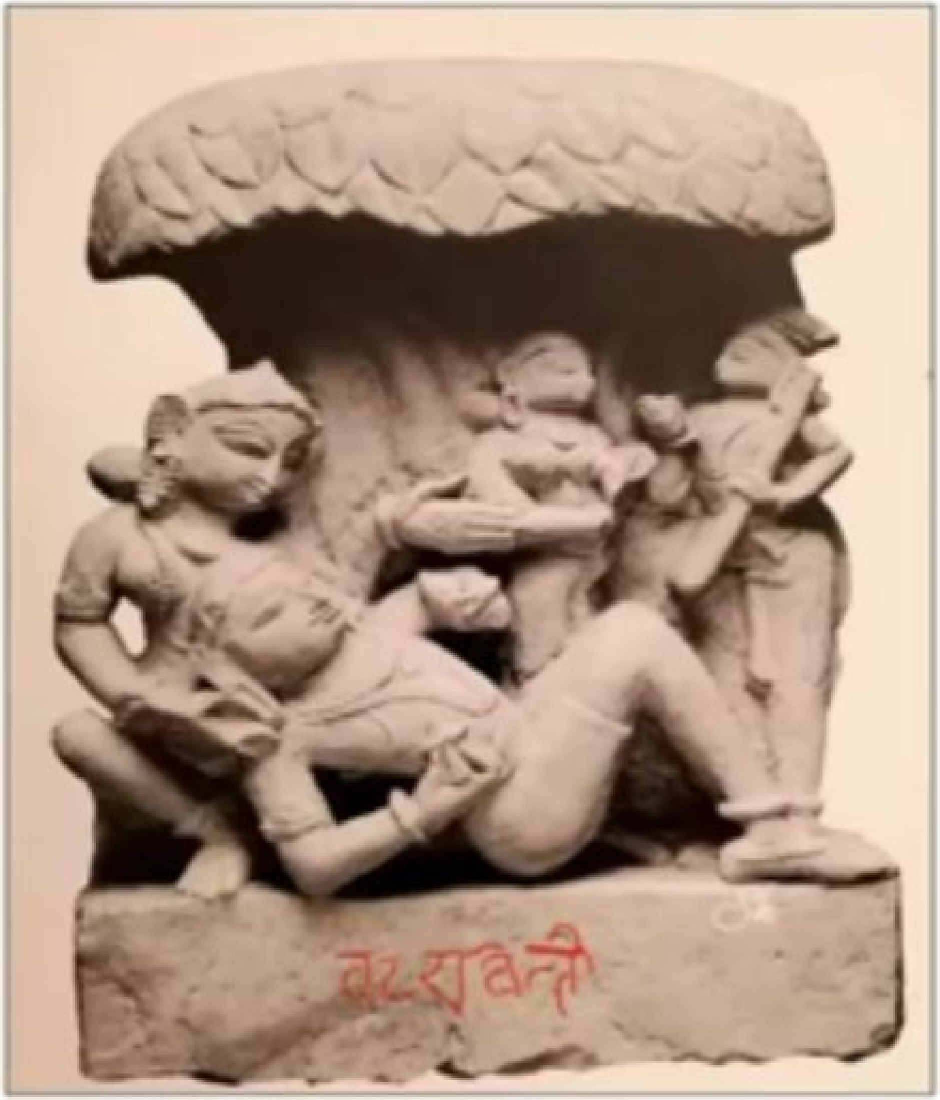
अभिलेख चित्र और जानकारी साभार - श्री कृष्ण जुगनू (प्रसिद्ध भारतीय पुरा विद्या लेखक और विशेषज्ञ)

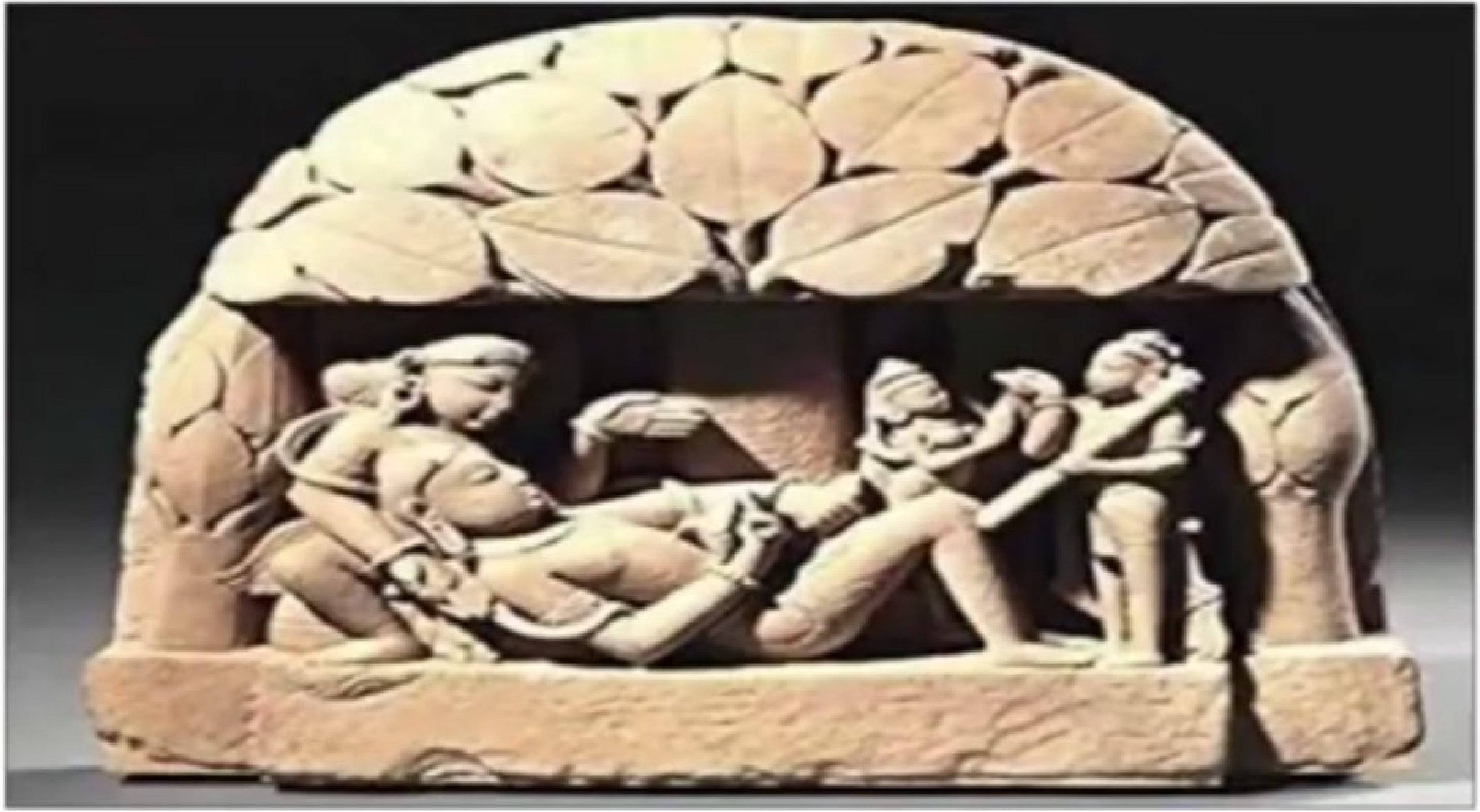
पुराणों में सती सावित्री वाला प्रकरण आपने पढा होगा , जिसमें सतवती द्वारा यमराज से अपने पति के प्राणों को वापस लाने का उल्लेख है। यह कथा हमें बताती है कि महिलाओं में वो क्षमता है कि वे ही यमराज को हरा सकती है। मृत्यु से वापस प्राण लाने का कार्य अपने सतीत्व की शक्ति से कर सकती है। इन कथाओं के माध्यम से स्त्री और सती की शक्तियों और पवित्रा का शिक्षण किया गया है। उ. प्र. से लगभग 12 वीं शताब्दी के दो मुर्ति शिल्पों पर भी सती सावित्री की कथा का अंकन है। एक प्रतिमा पर वट सावित्री अभिलेख भी अंकित है। इससे पता लगता है कि हिन्दू धर्म में महिलाओं को देवों से भी अधिक शक्ति सम्पन्न माना जाता था, वे असम्भव को भी सम्भव कर सकती थी किंतु उनका चरित्र शुद्ध हो।











अतः हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि भारत में हिन्दू समाज में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। उन्हें शासन, अध्ययन आदि के अधिकार प्राप्त थे। वे न केवल मंदिर जा सकती थी अपितु वे मंदिर बनवाती भी थी। और वे पुरुषों के समान गांव आदि भी बसा सकती थी।

समाप्त!!!